विल्मा मैनकिलर

लिंडा लोरी

चित्र: जेनिस ली पोर्टर

ग्यारह वर्षीय विल्मा मैनकिलर को इतना पता था कि उसके माता-पिता ने बहुत बड़ी गलती की थी. उन्होंने अपने परिवार को ग्रामीण ओकलाहोमा से एक अजीब, नए शहर में शिफ्ट किया था.

विल्मा जानती थी, कि एक दिन, वो ओक्लाहोमा की पहाड़ियों पर फिर वापस लौटेगी और अन्य चेरोकी परिवारों के पास आकर रहेगी. लेकिन फिर उसने अपने दिल की गहराईयों में और ताकत खोजने की कोशिश की.

लेखक लिंडा लोवी बताती हैं कि कैसे विल्मा ने अपनी चेरोकी विरासत में ताकत पाई. वो यह भी दिखाती हैं कि कैसे एक युवा लड़की चीफ मैनकिलर - 1985 से 1995 तक, चेरोकी नेशन की नेता बनी.

विल्मा मैनकिलर

लिंडा लोरी

चित्र: जेनिस ली पोर्टर

सैन फ्रांसिस्को, 1956

विल्मा मैनकिलर जल्दी से रज़ाई के नीचे जाकर छिप गई.

वो हाथ से बनी रजाई के नीचे गर्म और सुरक्षित थी.

बाहर, जंगली जानवरों की चीखें दीवारों से टकरा का गूँज रही थीं.

विल्मा की सैन फ़्रांसिस्को, कैलिफ़ोर्निया में वो पहली रात थी, और वो डरी हुई थी.

वो भेड़ियों की आवाज जानती थी. पर बाहर भेड़िए नहीं थे. वो कोयोट्स की आवाज जानती थी. पर बाहर कोयोट्स भी नहीं थे.

जब वो अगली सुबह उठी, तब बहुत कम सोने के कारण उसने जम्हाई ली.

विल्मा पता लगाना चाहती थी कि वे जानवर किस वजह से चिल्ला रहे थे.

वो कुछ ऐसा था जिसे उसने अपने ओक्लाहोमा के घर में कभी नहीं सुना था.

वो पुलिस सायरन की आवाज़ें थीं.

सैन फ़्रांसिस्को उन चीज़ों से भरा हुआ था जिन्हें विल्मा ने पहले न कभी देखा या सुना था. लोग उसके फ्लैट से लिफ्ट नाम में बक्सों में गायब हो जाते थे.

रात भर, उसकी खिड़की के बाहर रोशनी चमकती रहती थी.

सब कुछ अजीब और डरावना था, जो उसके पुराने घर से बहुत अलग था.

अपने दिमाग में, विल्मा, मैनकिलर-फ्लैट्स ओक्लाहोमा में अपने दादा के घर वापस गई.

उसका परिवार वहाँ खुश था. वे अन्य चेरोकी परिवारों के बिल्कुल करीब रहते थे.

उनके पास पीने के लिए झरने का पानी, हिरणों और लोमड़ियों से हरे-भरे जंगल, और एक घर था जिसे उसके पिता ने बनाया था.

लेकिन विल्मा के पिता चार्ली मैनकिलर, अक्सर पैसों को लेकर चिंतित रहते थे.

नौ बच्चों के साथ घर में हमेशा पैसों की किल्लत रहती थी.

पिता अपने बच्चों को सबसे अच्छा स्कूल, सबसे अच्छा घर, सबसे अच्छा जीवन देना चाहते थे.
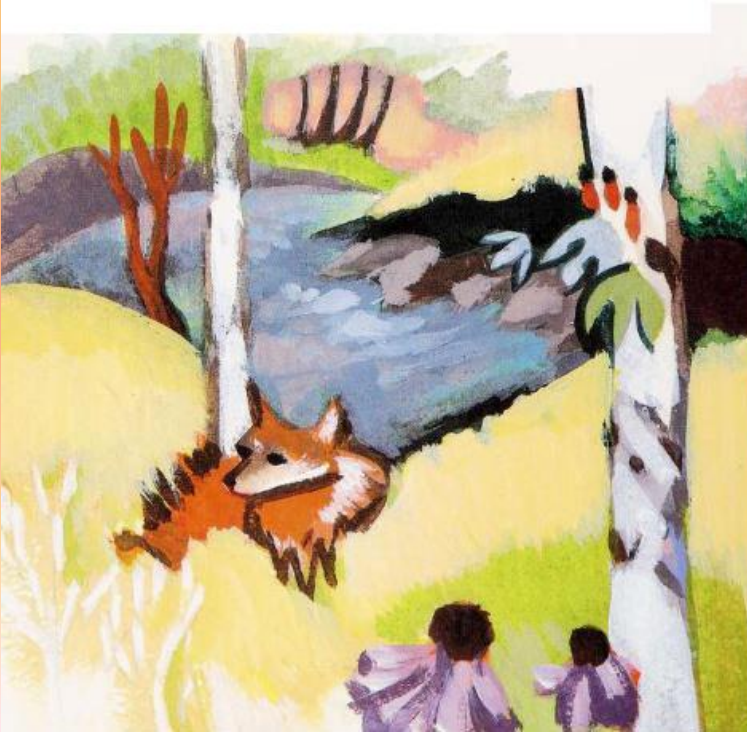
जब विल्मा दस वर्ष की हुई, तो स्थानीय इंडियन परिवारों के लिए अमरीकी सरकार एक योजना लेकर आई.

सरकार ने शहर में जाने वाले इंडियन परिवारों को, घर और नौकरी देने का वादा किया.

रात में विल्मा और उसके भाई-बहनों ने इस खबर सुनने के लिए बेडरूम के दरवाजे पर अपने कान लगाए.

बेडरूम मे उनके माता-पिता ने जाने की बात कही. उन्होंने शिकागो, न्यूयॉर्क और डेट्रॉइट जैसे शहरों के बारे में भी बात की. क्या शहर में स्कूल बेहतर होंगे?

क्या उनके बच्चों के लिए वहां जीवन खुशहाल होगा?
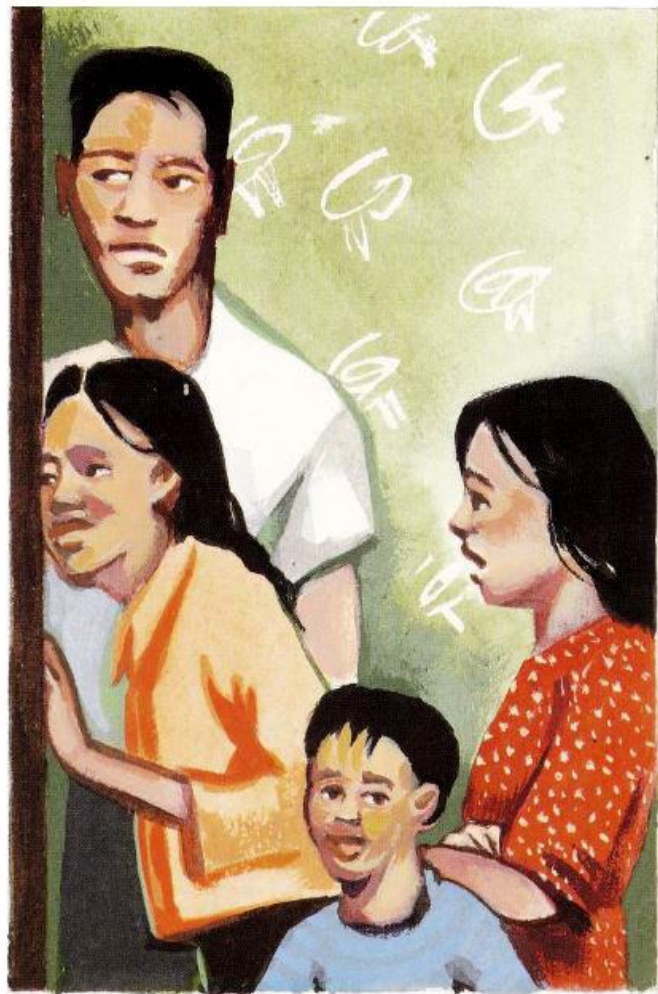
घर छोड़कर शहर जाना विल्मा को भयानक लग रहा था.

पर माता-पिता को शहर में बसने का फैसला अच्छा लग रहा था.

अक्टूबर 1956 में, परिवार अपना पुश्तैनी घर - मैनकिलर-फ्लैट्स छोड़कर चला गया.
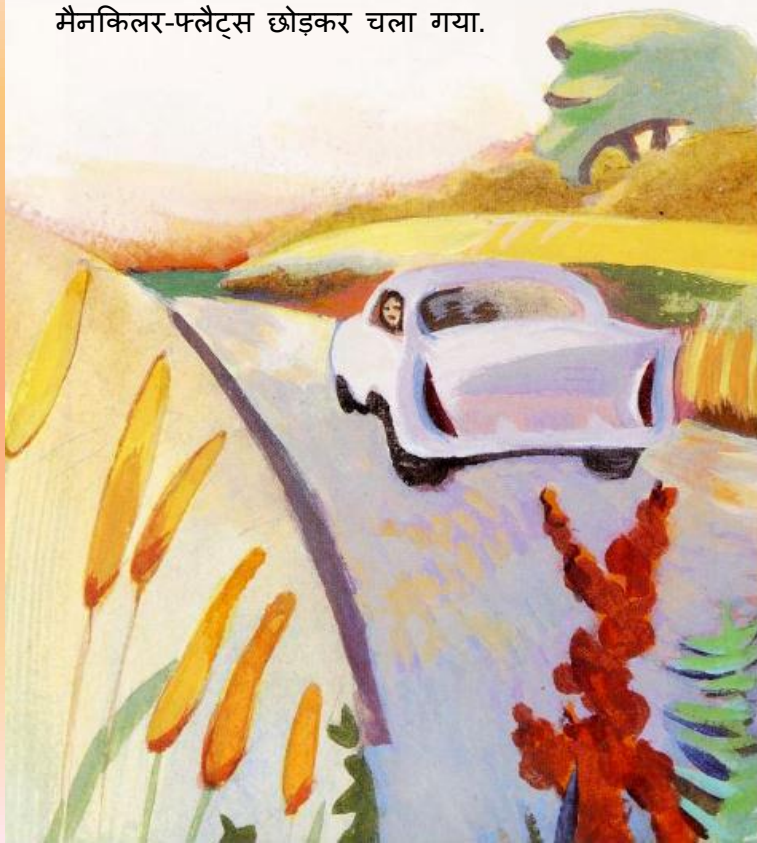
जाते समय, विल्मा ने कार की खिड़की में से बाहर का नज़ारा बहुत ध्यान से देखा.

वो अपने पुराने घर की उन सब यादें संजोना चाहती थी, जिनसे उसे प्रेम था: पक्षियों के रंग, पेड़ों के आकार, जानवरों की आवाज़ें.
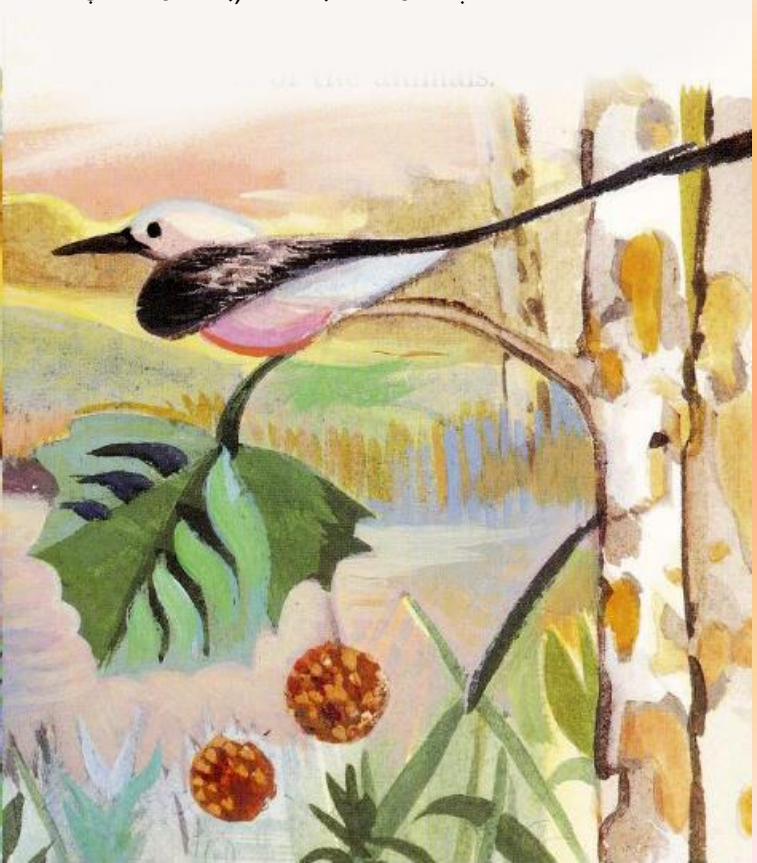
उसके नए घर का, रंग, आकार और ध्वनियाँ डरावनी थीं - और मतलबी भी.

जब विल्मा की नई टीचर ने स्कूल में उसका नाम पुकारा, तो कक्षा के सब बच्चे हँस पड़े.

चेरोकी लोगों के लिए, "मैनकिलर" एक विशेष उपाधि थी, जो किसी ऐसे व्यक्ति को दी जाती थी जिसने अपनी जन-जाति की रक्षा की हो.

पर स्कूल के बच्चों के वो एक मजाक लगा.

वे विल्मा के बात करने के तरीके और उच्चारण पर उसे चिढ़ाते थे.

उन्हें विल्मा के पहने कपड़े भी बड़े अजीब लगते थे.

जब विल्मा स्कूल से घर गई, तो उसने दुकान की खिड़कियों में साईन-बोर्ड देखे.

उन पर लिखा था : "नो डॉग्स, नो इंडियंस." (कुत्ते और इंडियंस का घुसना वर्जित था.)

विल्मा को लगा जैसे वह चाँद के उस पार चली गई हो.
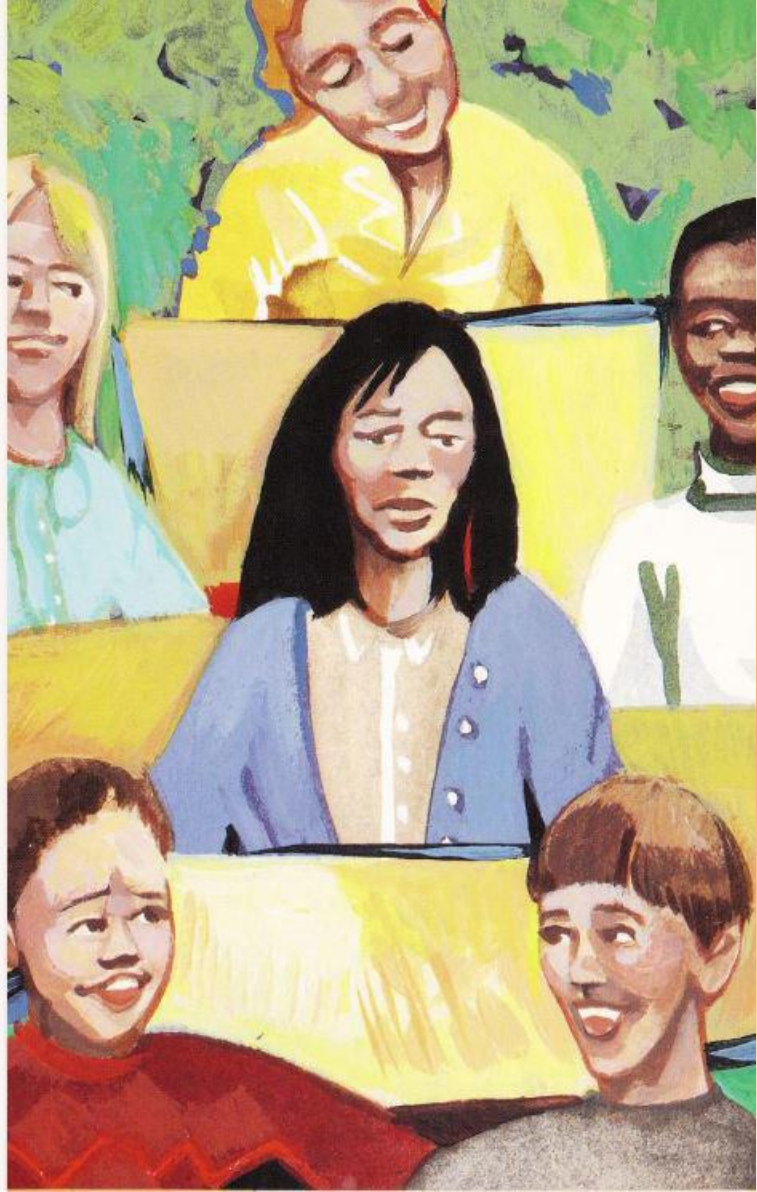
खुद को आराम देने के लिए, विल्मा ने अपने पुराने घर के बारे में सोचा: आकाश में उड़ते बाज, पेड़ों की चोटी पर हवा की सरसराहट.
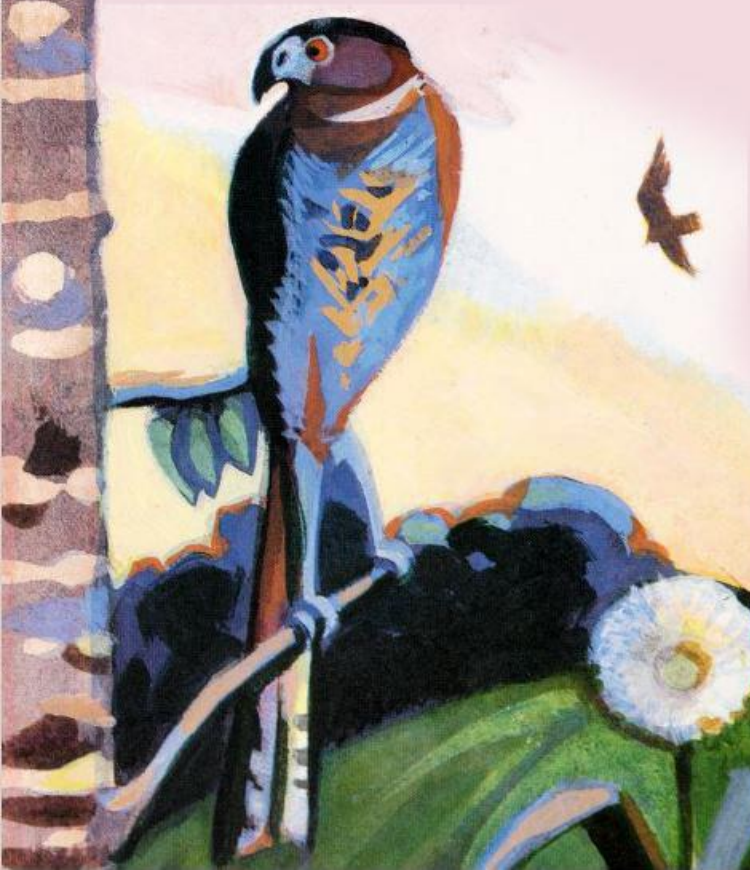
उसने उन चेरोकी लोगों के बारे में भी सोचा, जिन्होंने लम्बे समय से संघर्ष किया था.

लगभग 150 साल पहले, कई चेरोकी लोगों को अपने घरों को छोड़कर दूर जाने के लिए मजबूर किया गया था.

वो उनके लिए एक भयानक यात्रा थी.

उनकी उस दुखद यात्रा को "आँसुओं की पगडंडी" कहा जाता था.

विल्मा ने वो कहानी, अपने पिता और अपने रिश्तेदारों से कई बार सुनी थी.

"आँसुओं की पगडंडी", 1838

सालों पहले, विल्मा के परिवार ने उसे बताया कि ओक्लाहोमा में कोई भी चेरोकी नहीं रहते थे.

उनका घर दक्षिण-पूर्व था. वे उस भूमि से बेहद प्रेम करते थे!

वहाँ पहाड़ों पर हल्की बारिश होती थी.

वहाँ पेड़ों पर सेब, बेर और आड़ू उगते थे.
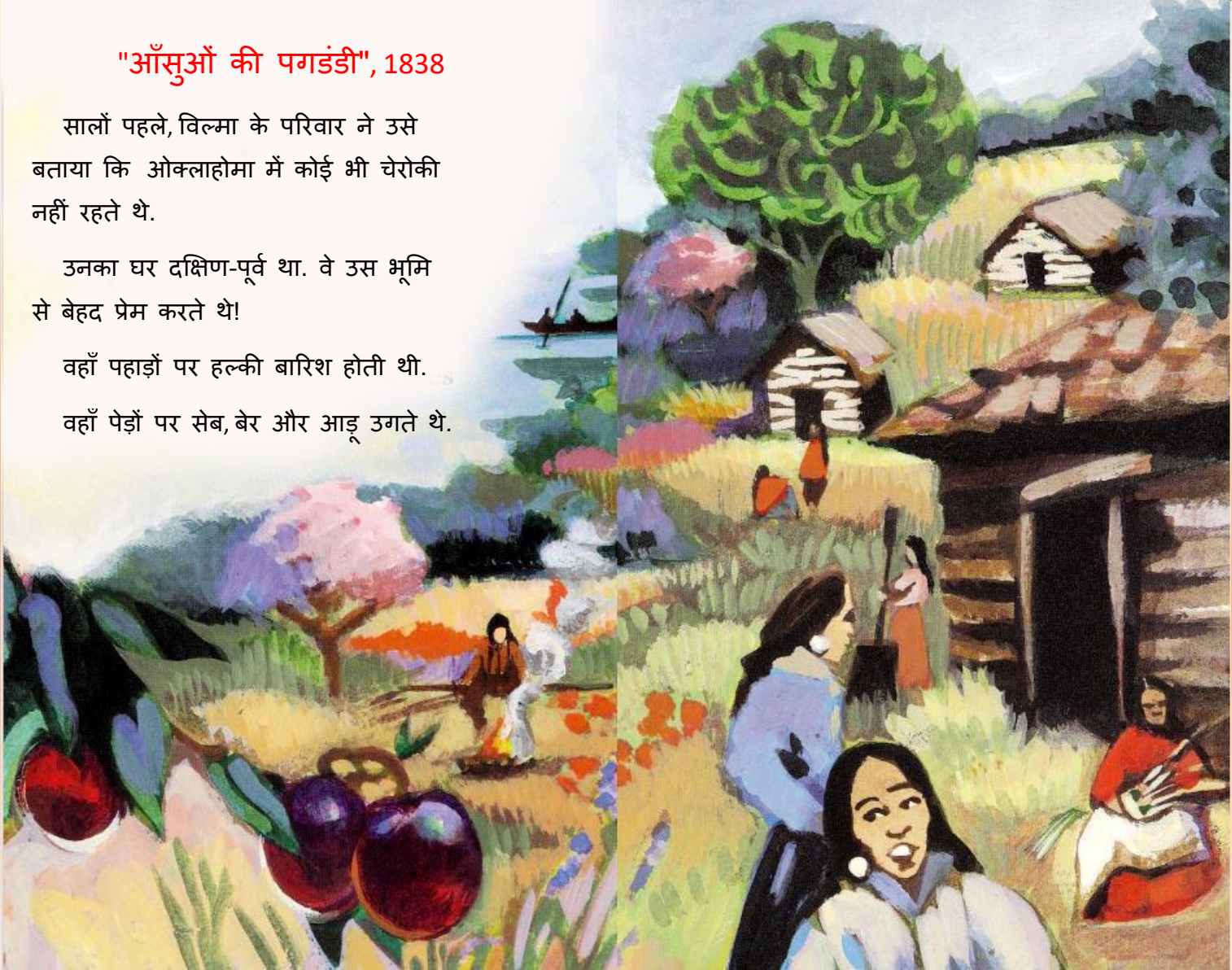
लेकिन गोरे लोग दक्षिण-पूर्व की हरी-भरी भूमि को हथियाना चाहते थे.

फिर राष्ट्रपति एंड्र्यू जैक्सन ने निर्णय लिया कि दक्षिण-पूर्व में रहने वाले इंडियंस की तुलना में, उनके लिए बसने वाले गोरे (सेटलर्स) अधिक महत्वपूर्ण थे.

1830 में, राष्ट्रपति ने, भारतीय निष्कासन अधिनियम (इंडियन रिमूवल एक्ट) पर हस्ताक्षर किए.

फिर वो एक कानून बना.

कानून के अनुसार सभी चेरोकी लोगों को जॉर्जिया, अलबामा, उत्तरी और दक्षिण कैरोलिना, टेनेसी और वर्जीनिया छोड़ना था.

चेरोकी लोगों ने अपनी पुश्तैनी ज़मीन छोड़ने से मना किया.

उन्हें अपने घरों और ज़मीन से प्यार था.

इसलिए, 1838 में, राष्ट्रपति वान ब्यूरर्ट ने वहाँ सेना भेजी.

सैनिकों ने चेरोकी लोगों को, उनके लॉग कॅबिन्स में से बाहर घसीटा.

सैनिकों ने चेरोकी लोगों को, वैगनों में लादा.

सैनिकों ने भागते चेरोकी लोगों को गोली मार दी.

बिगुल बजे.

वैगनों के पहिए लुढ़के.

बच्चों ने अपने पहाड़ी घरों से अलविदा कहा.

फिर चेरोकी लोगों ने 1,200 मील पश्चिम की यात्रा शुरू की. वे बारिश, ओलों और बर्फ में से होकर गुज़रे.

जब उनके वैगन खराब हुए तो लोगों को पैदल चलना पड़ा.
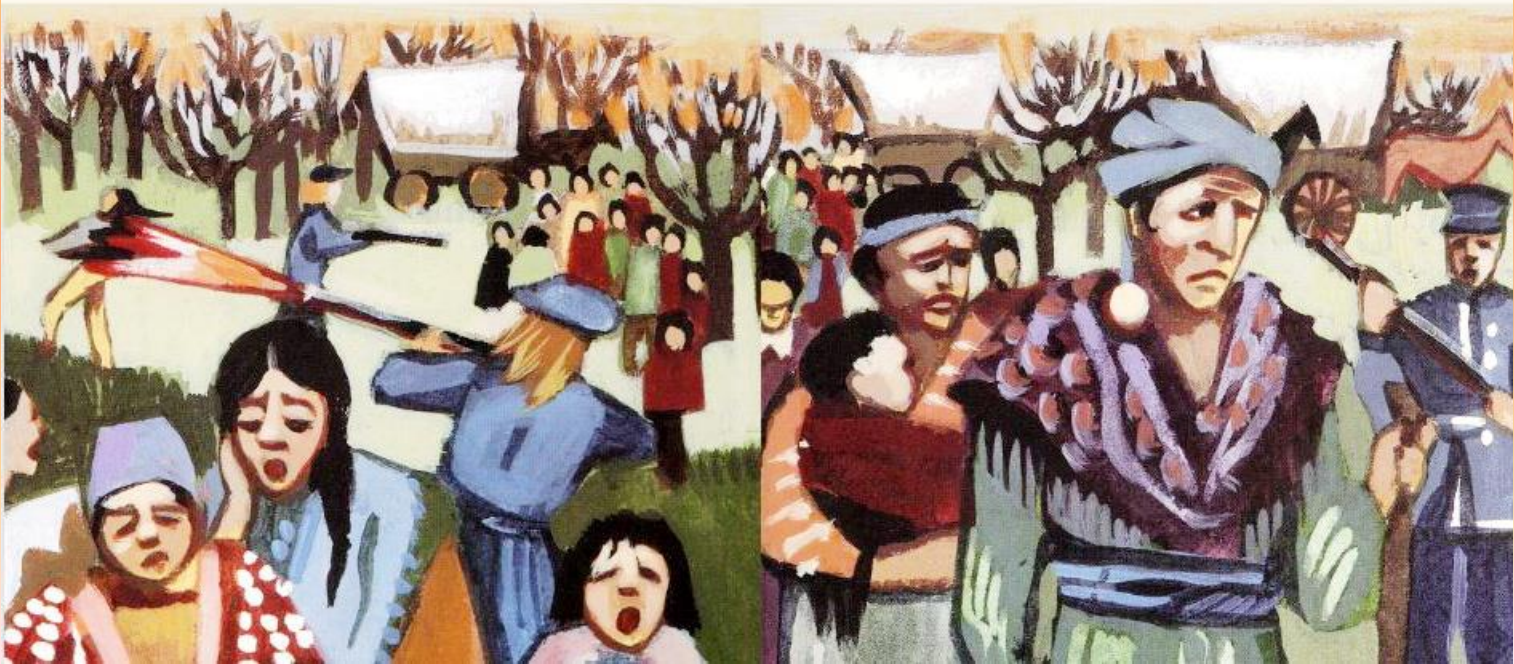
अगले दो वर्षों में, लगभग 17,000 चेरोकी लोगों को पश्चिम भेजा गया.

रास्ते में ही चार हजार लोगों की मौत हो गई.

सेना ने चेरोकी लोगों को उस स्थान पर छोड़ा जो बाद में ओक्लाहोमा बना.

तब वहां कोई घर नहीं था, कोई चर्च नहीं था, और वहां कोई स्कूल भी नहीं था.

लम्बी यात्रा के कारण कई माता-पिता, बच्चे और दादा-दादी बीमार पड़ गए थे.

उनके पास उनकी "आत्मा" के सिवा और कुछ नहीं बचा था.

अपनी "आत्मा" के कारण ही, वे अभी भी ज़िंदा बचे थे.

विल्मा ने "आँसुओं की पगडंडी" वाली कहानी को, हमेशा अपने दिल में सजह कर रखा.

विल्मा उन लोगों की परपोती थी जो उस पगडंडी पर रोए थे.

सैन फ्रांसिस्को में विल्मा भी रोई थी.

वहाँ, उसने केवल एक ही चीज़ के बारे में खुदको भाग्यशाली महसूस किया था.

जिन चेरोकी लोगों को ओक्लाहोमा भेजा गया था, वे कभी अपने पुराने घरों में वापस नहीं गए थे.

पर विल्मा जानती थी कि वो एक दिन फिर अपने पुराने घर में वापस जाएगी.

1977 में विल्मा फिर ओक्लाहोमा में अपने घर वापस लौटी. लेकिन उसे वहां लौटने में बीस साल से अधिक समय लगा.

तब तक, 1977 में, विल्मा की अपनी दो बेटियाँ थीं - जीना और फ़ेलिशिया.

फिर विल्मा अपनी बेटियों के साथ मैनकिलर-फ्लैट्स में वापस गई.

अपने चेरोकी दोस्तों से मिलकर विल्मा को बहुत अच्छा लगा.

वो अपनी खिड़की से रॉबिंस और ब्लूबर्ड्स पक्षियों को देखकर खुश हुई.

उसने चांदनी में, कोयोट्स की आवाज सुनी, और वो डरी नहीं.
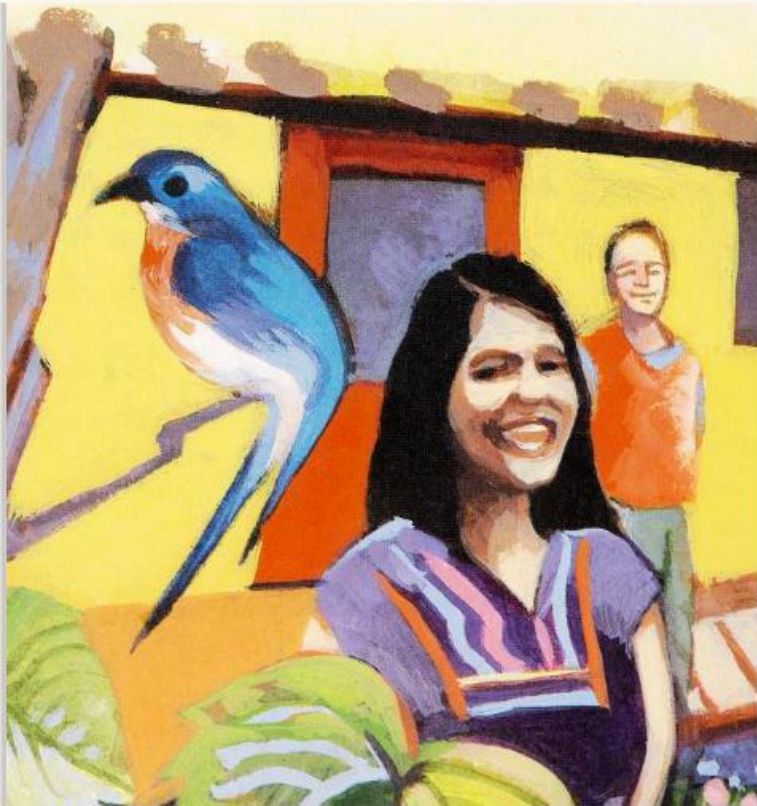
विल्मा को जल्द ही चेरोकी नेशन में एक नौकरी मिल गई.

चेरोकी लोगों के पास एक नहीं, दो राष्ट्रीयताएं थीं: एक संयुक्त राज्य अमेरिका की, और दूसरी चेरोकी नेशन की.

वाशिंगटन, डीसी में, अमेरिकी सरकार, सभी बड़े निर्णय लेती थी.

तहलेक्वा, ओक्लाहोमा में चेरोकी सरकार, चेरोकी नेशन के सभी बड़े निर्णय लेती थी.

विल्मा का काम पूरे पूर्वी-ओक्लाहोमा में, चेरोकी लोगों से जाकर मिलना था.

उनमें से कई बहुत गरीब थे.

उनके घरों में न बिजली थी और न पानी.

विल्मा ने उनके घरों को सुरक्षित और बेहतर बनाने में लोगों की मदद की.

1983 में एक दिन, विल्मा काम पर जा रही थी.

वो कुछ सोचते हुए एक कच्ची सड़क पर चली गई.

कल चेरोकी नेशन के चीफ ने, उसे एक नौकरी के बारे में बताया था.

वो चाहते थे कि विल्मा उनकी सहायक बने और उप-प्रमुख पद के लिए चुनाव लड़े.

विल्मा के लिए यह पूछा जाना एक बड़े सम्मान की बात थी!

वो चेरोकी नेशन में दूसरी सबसे बड़ी नौकरी थी.
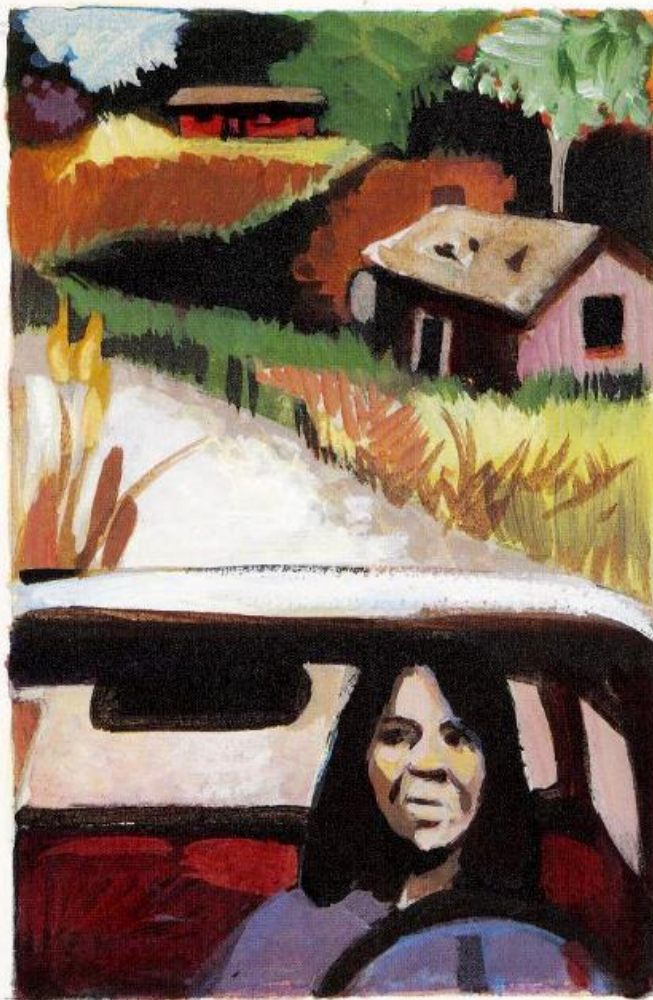
लेकिन विल्मा शांत स्वभाव की थी.

उप-प्रमुख बनने के लिए, उसे चुनाव में जीतना था.

पर उसे भीड़भाड़ में लोगों से बात करना पसंद नहीं था.

वो टेलीविजन पर इंटरव्यू नहीं देना चाहती थी.

"नहीं," उसने चीफ से कहा.

यह सुनकर चीफ स्विमर निराश हुए.

"ज़रा उसके बारे में गहराई से सोचो," उन्होंने कहा.

अब, कच्ची सड़क पर जाते समय विल्मा सोच रही थी कि क्या उसका निर्णय सही था.
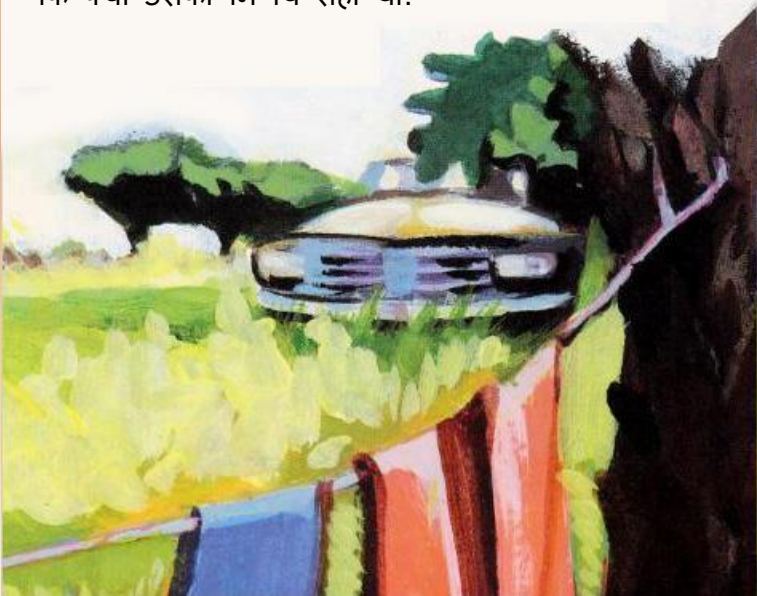
अचानक, उसे बाँझ (ओक) के पेड़ों के बीच में से कुछ दिखाई दिया.

उसने अपनी स्टेशन वैगन रोकी और खिड़की से बाहर देखा.

वहाँ एक पुरानी, टूटी-फूटी बस खड़ी थी.

बस की खिड़कियों पर पर्दे लटके थे. एक रस्सी से कपड़े लटके थे.

क्या वो सचमुच किसी का घर था?

विल्मा अपनी कार से बाहर निकली और बस के करीब गई.

अब वो देख सकती थी कि बस के अंदर कोई परिवार रहता था.
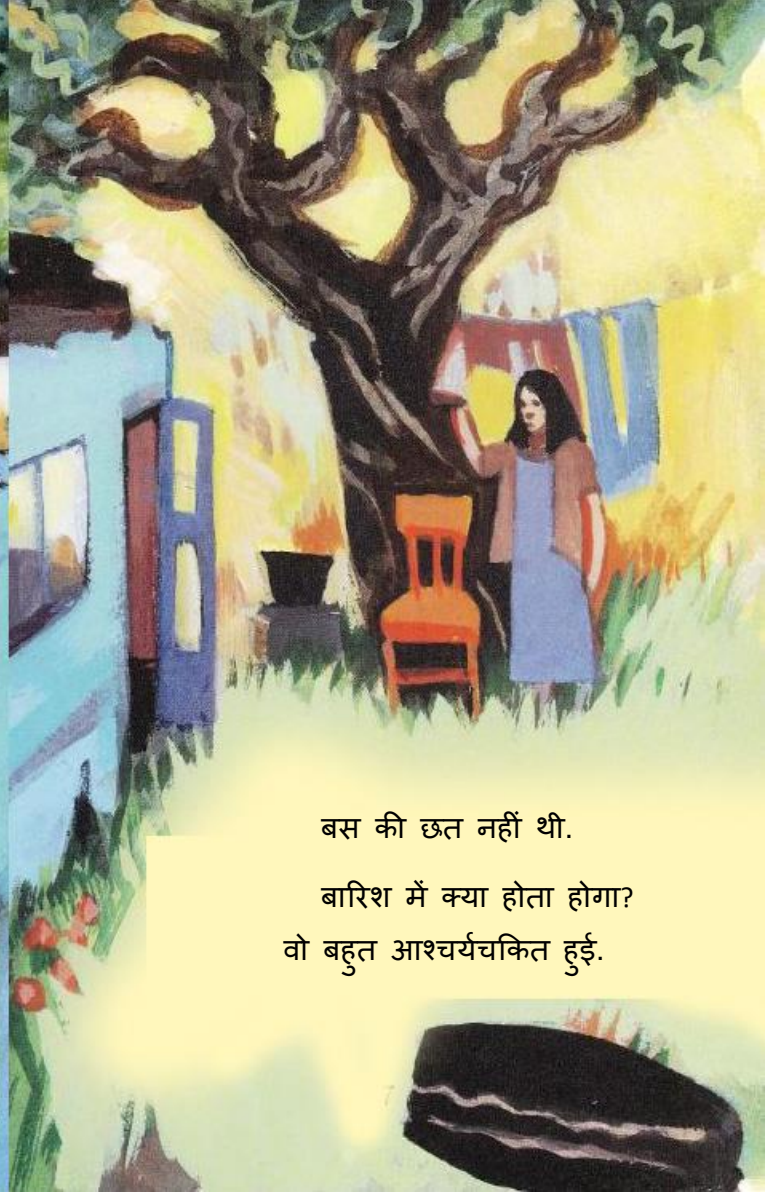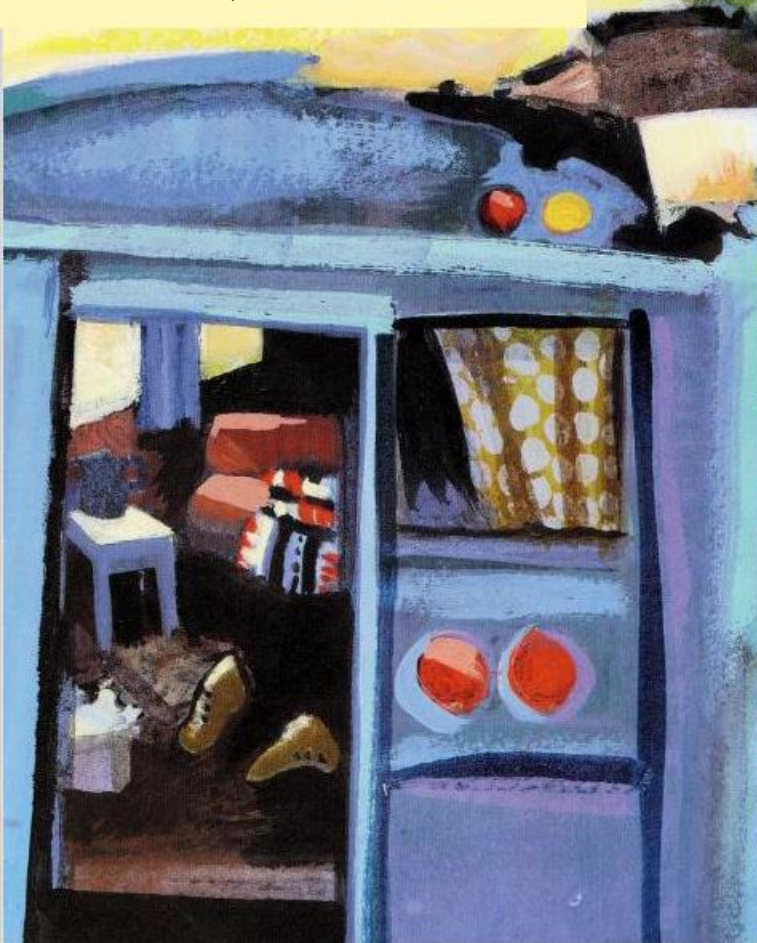
बस की छत नहीं थी.

बारिश में क्या होता होगा? वो बहुत आश्चर्यचकित हुई.

विल्मा को अपने अंदर गहराई में कुछ महसूस हुआ.

जब वो एक लड़की थी, तब अमरीकी सरकार ने सैन फ्रांसिस्को में, इंडियंस को एक बेहतर जीवन देने का वादा किया था.

लेकिन अमरीकी सरकार ने अपना वादा तोड़ा था.

यदि विल्मा उप-प्रमुख बनेगी, तो उसके पास चेरोकी लोगों के जीवन को बदलने के लिए कुछ ताकत होगी.

उसे पता था कि वो अपने वादे ज़रूर निभाएगी.

फिर विल्मा तेज़ी से, चीफ स्विमर के घर गई.

उसे चीफ स्विमर को कुछ बताना था. विल्मा के लिए अब एक नेता बनने का समय आ गया था.

वह डिप्टी-चीफ यानि उप-प्रधान के पद के लिए चुनाव लड़ेगी.
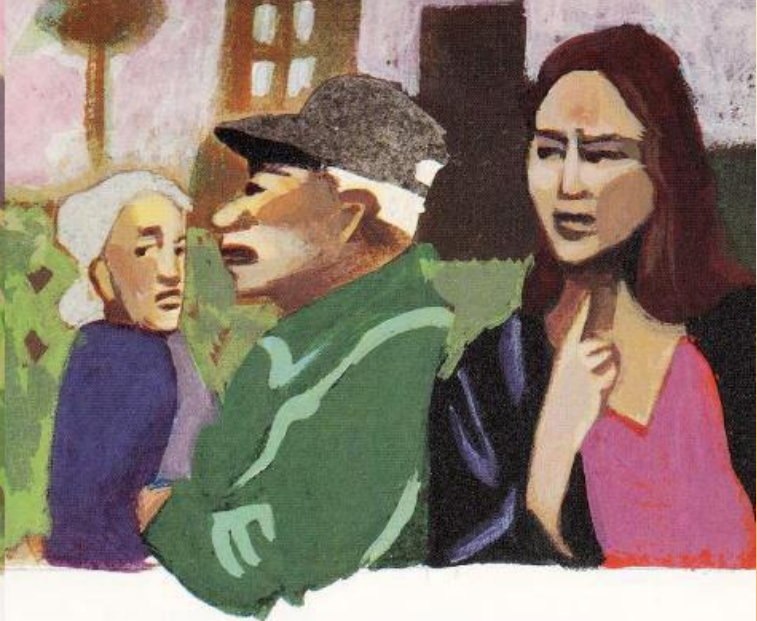
फिर विल्मा अपने चुनाव अभियान में लग गई. उसने अपनी शर्म पर काबू पाया और उसने लोगों की भीड़ से बात की.

विल्मा ने लोगों से उसे वोट देने की अपील की.

विल्मा के अच्छे काम के लिए, चेरोकी लोग पहले से ही उसके आभारी थे.

जब विल्मा लोगों के पास गई उन्होंने गर्मजोशी से उसका स्वागत किया.

पर अचानक लोगों की दोस्ती और गर्मजोशी गायब हो गई. कई लोग गुस्सा भी हुए.

कुछ बहुत गलत हो रहा था.

विल्मा उसे महसूस कर सकती थी.

फिर जल्द ही सच सामने आ गया.

लोग विल्मा की पीठ के पीछे बातें कर रहे थे.
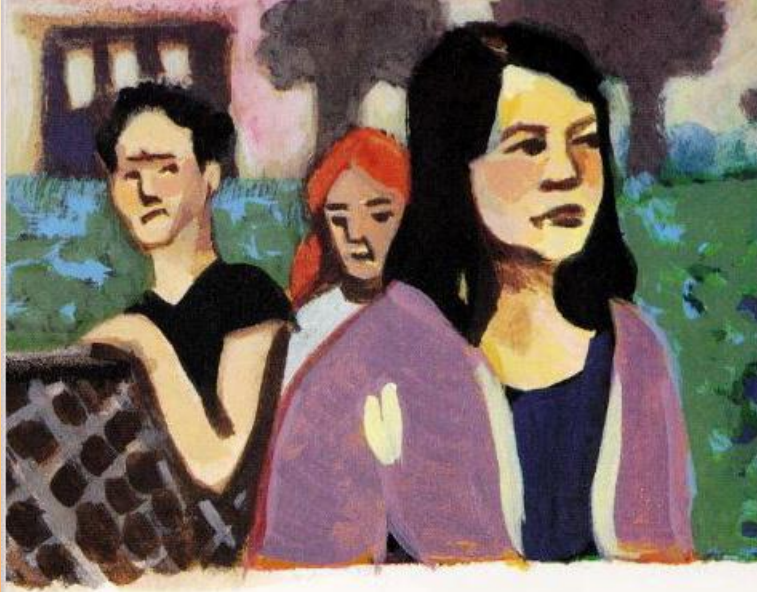
"हम चेरोकी लोगों की उप-प्रमुख पहले कभी कोई महिला नहीं बनी थी," उन्होंने कहा.

"वो पद पुरुषों के लिए है," उन्होंने कहा.

यह सुनकर विल्मा चौंकी!

वो कितना अजीब विचार था!

इतिहास में, चेरोकी पुरुषों ने, अपनी महिलाओं के साथ हमेशा समान व्यवहार किया था.

चेरोकी महिलाएं चिकित्सक थीं.

चेरोकी महिलाएं योद्धा थीं.

महिलाएं परिषद (काउन्सल) की सदस्य थीं.

कोई यह कैसे कह सकता था कि केवल पुरुष ही अच्छे नेता बन सकते थे?

क्या चेरोकी लोगों ने वो विचार गोरे लोगों से लिया था? विल्मा ने सोचा.
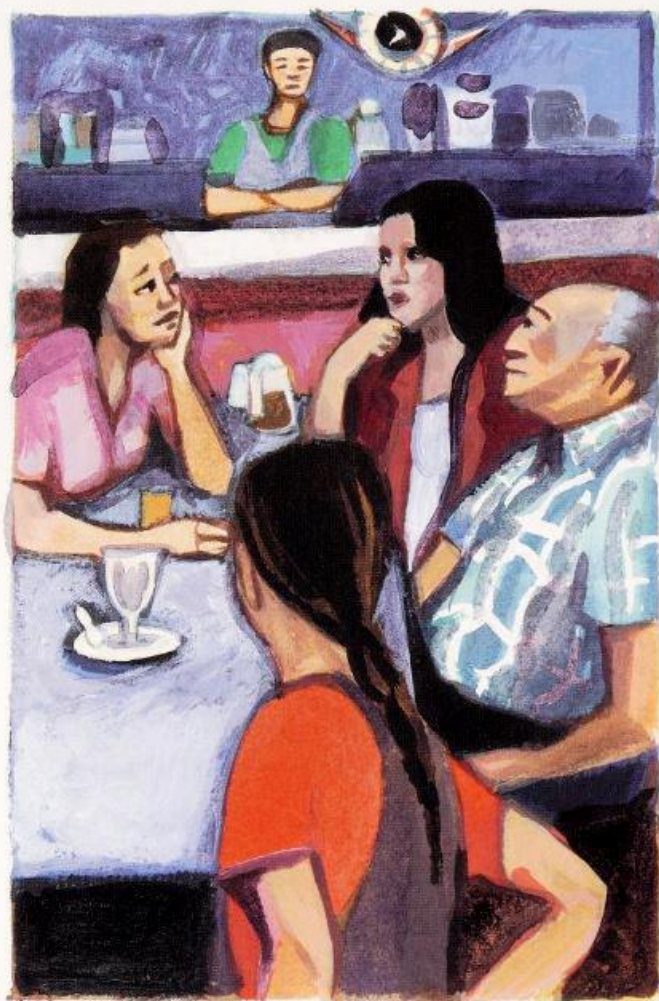
जब गोरे लोग अमेरिका आए तो वे अपने साथ कुछ नए विचार लेकर आए थे.

उनके कुछ विचार अच्छे थे.

पर कुछ विचार गलत थे.

गोरों का एक विचार यह था कि पुरुष, महिलाओं की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण थे.

विल्मा ने साबित किया कि गोरों का वो विचार गलत था.

अपने भाषणों में उसने कभी भी महिला होने की बात नहीं की.

उसने केवल चेरोकी लोगों की आशाओं और सपनों की बात की.

उसने घरों, अस्पतालों और बच्चों के केंद्रों के लिए पैसे देने का वादा किया.

उसने अपने लोगों को उनके शहरों को बेहतर बनाने में मदद करने का वादा किया.

पर परेशानी नहीं थमी.

पर विल्मा भी, नहीं रुकी.

किसी ने विल्मा की कार के टायर काट दिए.

अजनबियों ने फोन पर विल्मा को गालियां दीं और वे चिल्लाए.

किसी ने विल्मा को जान से मारने की धमकी दी.

विल्मा के चारों ओर सब कुछ एक बवंडर की तरह घूम रहा था.

लेकिन अंदर से विल्मा एकदम चुप रही.

उसने ताकत के लिए अपनी गहराईयों को टटोला.

बहुत पहले, उसके लोग "आँसुओं की पगडंडी" से बचे थे.

जब वो खुद छोटी थी, तब विल्मा, सैन फ्रांसिस्को से बची थी.

"आँसुओं की पगडंडी" में रोने वाले लोग बच गए थे क्योंकि वे चेरोकी लोगों के तौर-तरीके जानते थे.
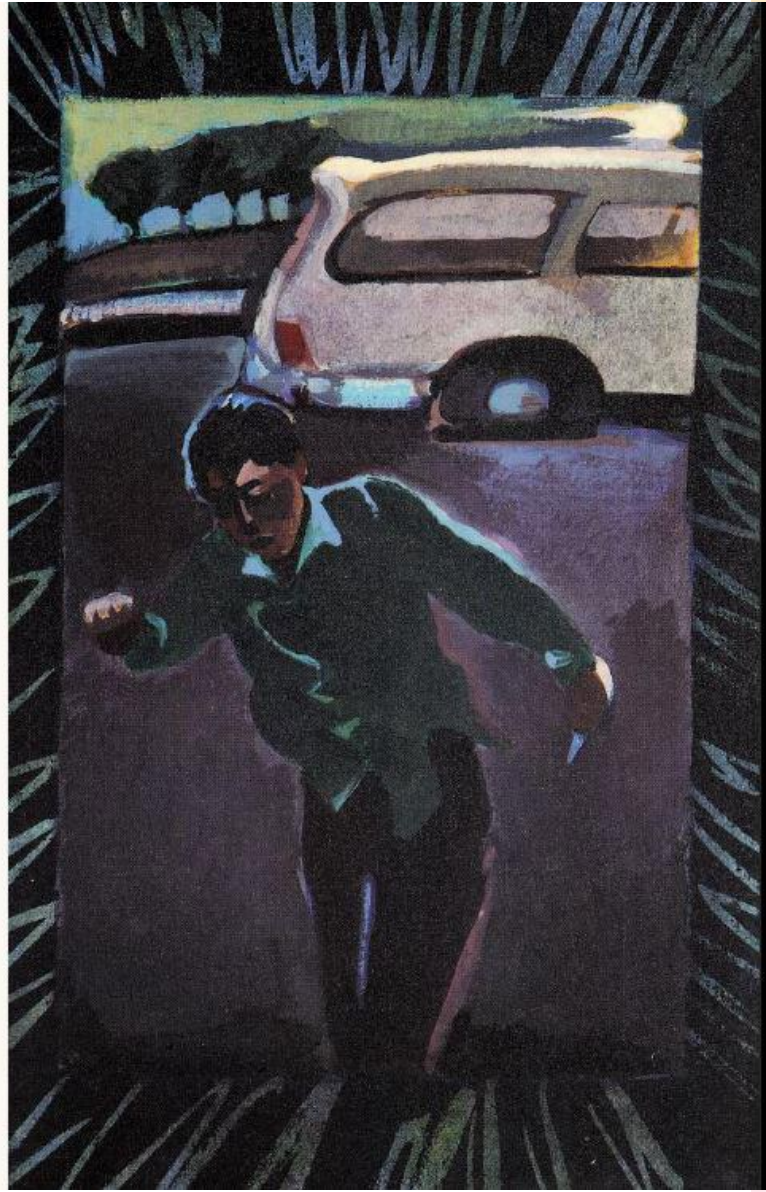
आपको बुरी चीजों के बारे में नहीं सोचना चाहिए.

आपको अच्छी चीज़ों के बारे में ही सोचना चाहिए.

अगर आपको लगे कि आप उनमें कभी सफल नहीं होंगे, फिर भी आपको आगे बढ़ते रहना चाहिए.

इसे "एक अच्छा दिमाग" होना कहते हैं.

अगर उसने चेरोकी जीवन के तौर-तरीकों का अभ्यास किया, तो विल्मा जानती थी कि वो ज़िंदा रह सकती थी - और चुनाव की लड़ाई जीत सकती थी.

अंत में, चेरोकी लोगों ने मतदान किया.

चेरोकी लोगों ने, चीफ स्विमर और विल्मा मैनकिलर को वोट दिया.

14 अगस्त 1983 को विल्मा उप-प्रमुख बनने वाली, पहली चेरोकी महिला बनी.

लेकिन वो केवल एक शुरूआत थी.
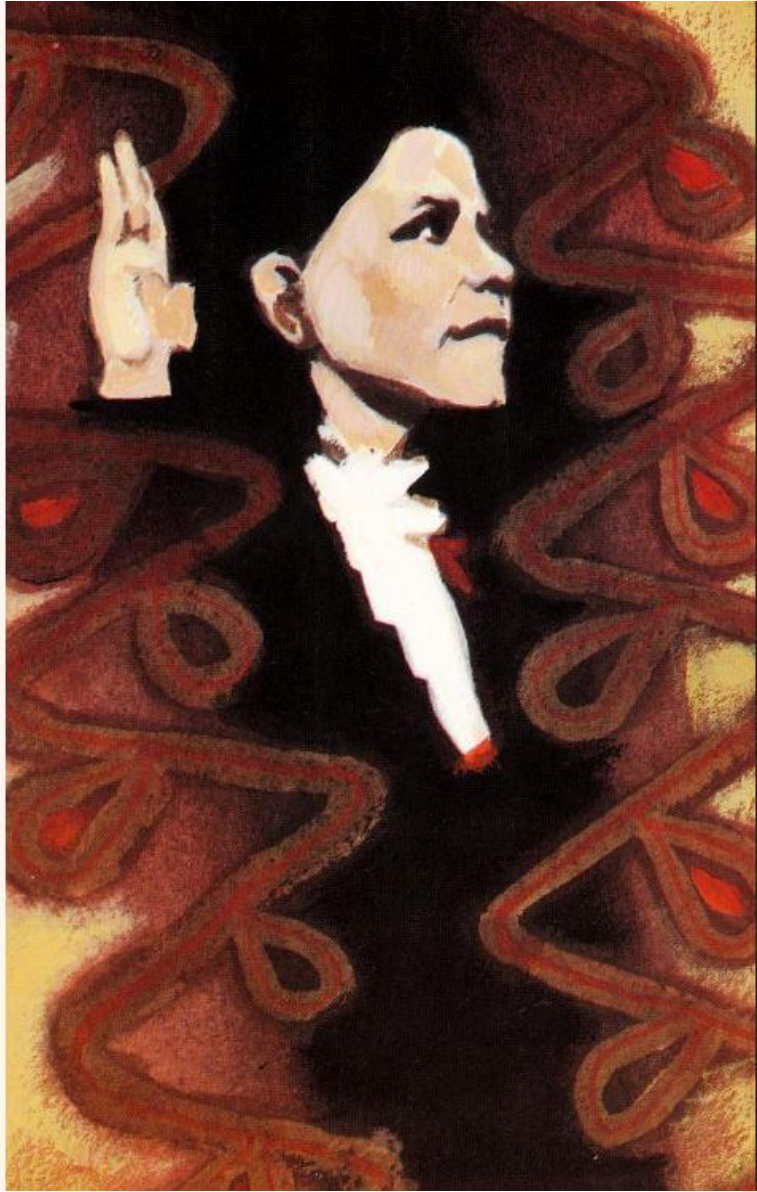
जब चीफ स्विमर को, वाशिंगटन, डीसी में नौकरी मिली, तो विल्मा, चेरोकी नेशन की प्रमुख बन गई.

1985 में पहली बार विल्मा, चीफ की कुर्सी पर बैठी.

"तुम वहाँ बैठे हुए बहुत स्वाभाविक लग रही हो," किसी ने टिप्पिणी की.

लोगों ने विल्मा को गले लगाया.

लोगों की आँखों से विल्मा के लिए खुशी के आंसू बहने लगे.

विल्मा जानती हैं कि चीफ के रूप में उनका काम कड़ी मेहनत वाला होगा.

लेकिन वो डरी नहीं.

उसने महसूस किया कि जो चेरोकी लोग "आंसुओं की पगडंडी" पर चले थे वे उसके साथ थे.

उनकी ताकत उसकी ताकत थी, ठीक वैसे ही जैसे जब वो सैन फ्रांसिस्को में एक लड़की थी.

विल्मा, ओक्लाहोमा में अपने घर आई थी.

अब वो चीफ मैनकिलर थी. वो चेरोकी इतिहास में पहली महिला चीफ थीं.

अंत के शब्द

चीफ मैनकिलर अपनी बातों पर खरी उतरीं. उन्होंने सुनिश्चित किया कि चेरोकी लोगों के पास घर, अस्पताल और बेहतर शहर बनाने के लिए पैसे हों. लोगों को उनका काम इतना पसंद आया कि विल्मा ने 1987 और 1991 में, दो बार चुनाव जीते.

इन वर्षों में, उन्होंने कई लोगों, विशेष रूप से मूल अमेरिकी महिलाओं की मदद की. अब चेरोकी लड़कियां जानती थीं कि अगर वो चाहें तो वे भी बड़ी होकर चीफ बन सकती थीं. और जो लोग मूल अमेरिकी नहीं थे, वे भी अब इंडियन चीफ के बारे में स्पष्ट रूप से जानते थे. वे असली लोग, हर दिन काम पर जाते थे, और अपनी सरकारों का मार्गदर्शन करते थे.

1995 में, विल्मा मैनकिलर ने फैसला लिया कि एक चीफ के रूप में उनका काम खत्म हो गया था. अब वो पूरी दुनिया की यात्रा करती हैं, और लोगों को मूल अमेरिकी जीवन के बारे में बताती हैं. उन्होंने हर तरह की मुसीबतों से लड़ाई लड़ी है, लेकिन हमेशा ज़िंदा रहने की शक्ति पाई है. उनके अनुसार उनकी परेशानियों ने ही उन्हें नेता बनना सिखाया.

वो मजबूती से खड़ी हैं. वो एक चेरोकी महिला हैं.

महत्वपूर्ण तिथियाँ

1830 - अमरीकी कांग्रेस ने (इंडियन रिमूवल एक्ट) इंडियन निष्कासन अधिनियम पारित किया

1838 - चेरोकी "ट्रेल ऑफ़ टीयर्स" (आंसुओं की पगडंडी) शुरू हुई

1839 - तहलेक्वा, ओक्लाहोमा, चेरोकी नेशन का आदिवासी मुख्यालय बना

18 नवंबर, 1945 - विल्मा पर्ल मैनकिलर का जन्म, मैनकिलर-फ्लैट्स, अडायर काउंटी, ओक्लाहोमा में हुआ

1956 - परिवार के साथ सैन फ़्रांसिस्को, कैलिफ़ोर्निया शिफ्ट हुईं

1969 - अलकाट्राज़ द्वीप, कैलिफोर्निया के जेल पर अमेरिकी मूल-निवासियों के कब्जे का समर्थन किया

1977 - एक दुखी शादी के बाद, बेटियों जीना और फ़ेलिशिया के साथ ओक्लाहोमा वापस गईं और चेरोकी नेशन के लिए काम करना शुरू किया

1979 - कार दुर्घटना में लगभग मृत्यु; फिर उन्हें ठीक होने में एक साल लगा

1981 - ओक्लाहोमा के बेल शहर में, पानी की व्यवस्था की

1983 - चेरोकी नेशन की उप-प्रमुख चुनी गईं

1985 - चीफ स्विमर के चले जाने पर विल्मा चीफ बनीं

1986 - चार्ली सोप से शादी की

1987- निर्वाचित चीफ

1990 - ऑपरेशन में भाई से किडनी मिली

1991 - दूसरे पूर्ण कार्यकाल के लिए चीफ चुनी गईं